॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! तू कल्याण करने वाला है। आज तू हमें क्यों प्रेरित नहीं कर रहा है। हम भी तो तेरी सृष्टि में आए हैं। संसार भी तो आपका बनाया हुआ है। भगवन्! आपने इन दुराचार और इन पाप कर्मों को क्यों रचाया? आज प्रभु! इनको न रचाते तो हम संसार में पापी न बनते। प्रभु आज हम पापी हैं। हमें अपने कण्ठ से लगा। आज हमें प्रेरणा देकर उन पाप भावनाओं को समाप्त करा। प्रभु! हम ज्ञानाग्नि में इन्हें भस्म करना चाहते हैं। विधाता! हम तेरी शरण के लिए महानता चाहते हैं। प्रभु! तेरी सहायता चाहते हैं। हमें वह सहायता दे, जिससे हम ब्रह्म के समीप जाएँ, हम यज्ञशाला में जाए। अग्नि प्रज्वलित करें और देवताओं को हवि दें। देवता उसे पाकर प्रेरणा देंगे जिन प्रेरणाओं को पाकर, प्रभु! हम तेरी गोद में आ जाएँगे। हे कल्याणकारी प्रभु! आप कहाँ है? आज हमारे कल्याण के लिए योजना बना। हम तेरी संसार रूपी यज्ञ वेदी पर आए हैं। हमें प्रेरणा दें। हमें महान् बना। हम वास्तविक ब्रह्मा बनें, योगी बनें। हे विधाता! आज हम अपना ही कल्याण नहीं चाहते हम संसार का भी कल्याण चाहते हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 555 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 630
वर्ष : 47 44 समग्र वर्ष : 53

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. भौतिक याग से आध्यात्मिक याग	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-19
4. यज्ञ तथा वेद की महत्ता	पूज्यपाद-गुरुदेव	20-29
5. मानव उत्थान की प्रेरणा	पूज्यपाद-गुरुदेव	30-36
6. ऋषियों के उद्‌गार		37
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		38-42

विशेष सूचना

समिति द्वारा साहित्य को प्रकाशित कराने की गति को सुचारू रूप से निरन्तर गतिशील बनाए रखने के लिए कागज के दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए मूल्य एवम् प्रकाशन पर जी.एस.टी. लगने के कारण प्रकाशित साहित्य के मूल्यों में वृद्धि करना अति आवश्यक हो गया है जिसके कारण **1 जनवरी 2019 से पोथियों के मूल्य पुनः से निर्धारित किए जा रहे हैं।** अतः आप सभी से इस अमूल्य निधि को चिरकाल तक जनसाधारण में प्रकाशित व प्रसारित रखने के लिए जीवन दान की अपेक्षा वन्दनीय है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

भौतिक याग से आध्यात्मिक याग

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। जो परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और वह सर्वज्ञ हैं, कोई स्थली ऐसी नहीं है जहाँ वह परमपिता परमात्मा न हों। समुद्रों की कोई तरङ्ग ऐसी नहीं है जहाँ वह परमपिता परमात्मा न हों और पर्वतों की कोई गुफा ऐसी नहीं जहाँ वह परमपिता परमात्मा वास न करते हों। वह सर्वज्ञ हैं। एक-एक परमाणु में निहित रहने वाले हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को सर्वज्ञ कहते हैं क्योंकि वह हमारे अन्तर्हृदयों में विद्यमान रहता है और हृदय में वह प्रेरणा देता रहता है। तो यह मानव प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है, प्रेरणा को प्राप्त करता रहता है। और संसार के नाना प्रकार को, इस संसार को अपने में निहारता है और इसका निर्माण करता रहता है और नाना प्रकार के क्रियाकलापों में सदैव रत्त रहता है। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा को सर्वज्ञ, कोई स्थली ऐसी नहीं जहाँ वह देवत्व न हो और प्रेरणा का यह स्रोत है। प्रेरणा देता रहता है और जितना भी यह जड़ जगत और चैतन्य जगत है वह सर्वत्रता में विद्यमान रहता है। और संसार की मानो एक माला बना करके, इस ब्रह्माण्ड की वह माला बना करके वह अपने में धारण कर रहा है।

याग की विवेचना

वेद का मन्त्र कहता है कि सर्वण ब्रह्मे तम् देवाः वह परमात्मा मानो व्रहे सर्वज्ञ है और वह मानो देखो, याग उसका आयतन, उसका गृह और उसका सदन है, मानो वह याग में विद्यमान रहता है। जितना भी सुक्रियाकलाप है संसार का वह सर्वत्र एक याग के रूप में परणित रहता है। तो इसीलिए हमें विचार-विनिमय करना है, अपने विचारों को सु बनाना है और जब मानव अपने विचारों को सु बना लेता है तो याग में परणित हो जाता है। मानो याग जहाँ अग्नि देवताओं का मुख माना गया है और देवताओं के मुख में साकल्य प्रदान किया जाता है अथवा चरू दिया जाता है और अग्नि उसका विभाजन कर देती है। तो मानो देखो, अग्नि देवताओं का मुख कहा जाता है। मानव शरीर में भी, बाह्य जगत में भी परन्तु वही अग्नि काष्ठ में रहने वाली है और वह काष्ठं ब्रह्मा वर्णं ब्रहा एक-दूसरे से मिलान होते हुए बेटा! वह प्रदीप्त हो जाती है। तो मानव बेटा! देखो, इस महान् याग को अपने में पवित्रत्व को धारण करता हुआ, सङ्कल्पोमयी मानो याग में मानव को परणित रहना चाहिए। हम प्रेरणा को प्राप्त करते रहते हैं और तेजोमयी अग्नि के ऊपर अपनी विचारधारा को परणित करते रहे हैं। तो आओ मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। केवल विचार यह कि हमारा याज्ञिक कर्म पवित्र होना चाहिए। जितने भी सु क्रियाकलाप हैं उन सर्वत्र का नाम एक याग स्वरूप माना गया है। कोई भी संसार का सुकर्म हो, परन्तु देखो, जितने भी सुकर्म से विपरीत हैं वही अशुद्ध है वही अयास कहे जाते हैं। तो इसीलिए आज का हमारा वेद मन्त्र यह कह रहा है यागाम् भवि वर्णम् सुतम् मानव को याज्ञिक बनना चाहिए क्योंकि याग अपने में बड़ा विचित्रत्व माना गया है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने तो बेटा! अपने विचारों में सर्वत्रता का नाम बेटा! याग माना गया है। बेटा! मैंने तुम्हें कई काल में याग के सम्बन्ध में विचार दिए और याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का

जो मन्तव्य रहा है, वे यागों के ऊपर बड़ा अध्ययन करते रहते थे। उनका नाना प्रकार के यागों के ऊपर अध्ययन रहा है। जैसे उनके यहाँ वाजपेयी याग होता रहा है, अग्निष्टोम याग होते रहे हैं, वृष्टि याग होता रहा है, अजामेध याग होता रहा है, अश्वमेध याग होता रहा है। परन्तु देखो, जहाँ पुत्रेष्टि याग भी होता रहा भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों में मानो जैसे धनुर्याग का वर्णन आता रहा है। तो भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन हमारे वैदिक साहित्य में होता रहा है। परन्तु संसार का कोई ऐसा क्रियाकलाप नहीं है, जो बिना याग के सम्पन्न होता हो याग ही उसमें प्रतिष्ठित रहता है।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने तपस्या करने के पश्चात् और मन को पवित्र बनाने के पश्चात् बेटा! देखो, शिलस्थ अन्न को ग्रहण करके याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का निर्माण किया और उस पोथी में संसार के वर्चस्व यागों का उन्होंने वर्णन किया परन्तु उन्होंने एक कन्या याग का भी वर्णन किया है। कन्या याग अपने में बड़ा विचित्र याग है। मेरे प्यारे! देखो, वाजपेयी यागों में भी जैसे गोमेध याग है, अजामेध याग है। मेरे पुत्रों! देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का हमारे वैदिक साहित्य में वर्णन आता रहता है। आज मैं यागों के कर्मकाण्ड में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। केवल विचार विनिमय ये कि देखो, याग अपनी आभा में बड़ा विचित्र रहा है।

ग्यारह होता

आओ, मुनिवरो! देखो, मैंने तुम्हें कई कालों में उन विचारों की पुनरूक्तियाँ तो करता ही रहता हूँ। परन्तु आज का हमारा वेद का ऋषि क्या कह रहा है–यज्ञदत्त ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु!, हे भगवन्! आप का बड़ा अध्ययन है याग के सम्बन्ध में, और इसके ऊपर आपने

तपस्या भी की है क्योंकि **तप और अध्ययन जो है यही तो मानव को पवित्र बनाता है।** तो इसीलिए तुम्हारा जो अध्ययन है, आपके अनुकूल आपका तपस्या का जो चर है वह वर्चस है, वह बड़ा विचित्र है। क्योंकि यजमान को वर्चस कहते हैं और **वर्चस उसे कहते हैं जो मानव देखो, अपने जीवन को क्रियात्मक और यागों में परणित कर देता है।** जैसे बेटा! मैं कई कालों से तुम्हें याग के ऊपर आध्यात्मिक याग के ऊपर चर्चाएँ हमारी हो रही थीं। इसके पश्चात् मैं बेटा! तुम्हें यह वर्णन कराना चाहता हूँ जहाँ ग्यारह होताओं के द्वारा यजमान याग करता है। तो ग्यारह होताओं को वह पवित्र बनाता है, उसको वर्चस कहते हैं। जो ग्यारह होताओं के द्वारा प्रत्येक इन्द्रियों के साथ में मन की प्रतिभा निहित होती है तो उसी का नाम वर्चस कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है क्या उसी में मानव को रत्त रहना चाहिए। क्या देखो, **दस इन्द्रियाँ ग्यारहवाँ जो मन** है इससे गुथा हुआ है और प्राण की उसमें पुट लग जाती है तो उसमें गतिवान हो जाता है और यदि मुनिवरो! उसमें आत्मा की पुट लग जाती है तो वह योगेश्वर बन जाता है।

नौ होता

विचार-विनिमय क्या मुनिवरो! देखो, विचार आता रहता है, वेद का ऋषि कहता है नौ होताओं के द्वारा यजमान को याग करना चाहिए। बेटा! नौ होता कौन से होते हैं? सबसे प्रथम मेरे प्यारे! जो नेत्र हैं और उसके पश्चात् जो घ्राण, और दो श्रोत्र कहलाते हैं। मेरे प्यारे! अमृताम श्रोत्राणि गच्छगम् और मुनिवरो! एक मुखारबिन्दु कहलाता है मेरे प्यारे! एक उपस्थ और एक ग्रीवा ये नौ द्वार कहे गए हैं। इन नौ द्वारों के देवताओं को जानना चाहिए। नौ द्वारों के देवता कौन से हैं बेटा! कहीं विश्वामित्र, कहीं मुनिवरो! देखो, वशिष्ठ विद्यमान हैं। कहीं कश्यप और कहीं अत्रि विद्यमान हैं कहीं रहा श्वेतकेतु और कहीं बृहित और मुनिवरो! देखो, ये सब देवताओं का इसमें वास हो रहा है। कहीं मानो देखो, दूसरे

रूप में चन्द्रमा का वास है, तो कहीं पृथ्वी का वास है, कहीं मेरे प्यारे! उत्तरायण का वास है। तो कहीं मुनिवरो! देखो, वह अमृताम् कृष्णाम् भू वर्णम् ब्रव्हे उत्तरायण और देखो, कृष्णाय दोनों को अपने में समावेश कराता रहता है। मेरे प्यारे! दिशाओं से सम्बन्ध है और कहीं अन्तरिक्ष से सम्बन्ध है। और कहीं मुनिवरो! देखो, पृथ्वी की गन्ध से समन्वय है, तो कहीं मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रवृत्तियों में विद्यमान रहता है। तो विचार केवल यह कि कहीं चन्द्रमा प्रधान है तो कहीं अग्नि प्रधान है। तो मुनिवरो! देखो, ये सर्वत्र देवता अपनी आभा में निहित रहने वाले हैं। तो किन्ही का वायु देवता है, तो ये नौ द्वार हमारे द्वारा विद्यमान हैं। परमपिता परमात्मा ने, सृष्टि के पिता ने जब सृष्टि का सृजन किया तो मेरे प्यारे! यह मानव के शरीर में नौ प्राणों का व्यवधान किया और यह जो वह नौ द्वार हैं वह नौ देवता हैं, नौ ऋषि हैं। अत्रि कहते हैं। जो अति आहार कर जाता है, अति आहार करने वाले को मुनिवरो! अत्रि कहते हैं। मेरे प्यारे! विश्वामित्र उसे कहते हैं जो विश्व को मित्र स्वीकार करता है। **वशिष्ठ उसे कहते हैं जो अपने में प्रतिष्ठित रहता है।** मेरे प्यारे! उसे वशिष्ठ कहते हैं, और कश्यप उसे कहते हैं जो कश्यप की भाँति मानो धीमा-धीमा नेत्रों से वृष्टि अवृत्त करा देता है। तो मेरे प्यारे! यह अपने को अपनेपन को ही पान कर रहे हैं। मानो कोई धीमा गति कर रहा है। तो ये सर्वत्र हमारे देवता कहलाते हैं इन्ही देवताओं के द्वारा जो नौ द्वारों पर देवता विद्यमान हैं इन सर्वत्र देवताओं को जान करके जो यजमान याग करता है उसका सौभाग्य है, वह अपने में सौभाग्यशाली कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय होता रहा है यह नौ द्वार हैं, नौ द्वारों के द्वारा यजमान को याग करना चाहिए।

सप्त होता

मेरे पुत्रों! देखो, तृतीय अमृतां सप्तम् ब्रव्हे वेद मन्त्र कहता है सप्त होताओं के द्वारा यजमान को याग करना चाहिए। बेटा! सप्त

होता कौन से होते हैं? मानो दो नेत्र हैं और श्रोत्रम् ब्रव्हे। मेरे प्यारे! देखो, श्रोत्र जिनका दिशाओं से समन्वय रहता है, वाणी और मुनिवरो! देखो, घ्राण के छिद्र ये सप्त होता कहलाते हैं। यहाँ सप्तम् ब्रह्मे यज्ञशाला के समीप विद्यमान हो करके इन सब होताओं के द्वारा यजमान याग करता है। लघु मस्तिष्क में, वह ब्रह्मरन्ध्र में मुनिवरो! देखो, अपनी त्रिकुटिका को दृष्टिपात करता रहता है। जहाँ इंगला, पिंगला, सुषुम्ना का मिलान होता है उसे त्रिवेणी कहते हैं, त्रिजटा कहते हैं। मेरे प्यारे! आगे चल करके एक कृतिका स्थली आती है, उसे मुनिवरो! जहाँ तीनों नदियों का, तीनों नाड़ियों का मिलान होता है, वह मस्तिष्क के ऊर्ध्वा भाग में रहता है। उसके पश्चात् मुनिवरो! ब्रह्मरन्ध्र में उसकी प्रवृत्ति चली जाती है और ब्रह्मरन्ध्र में मुनिवरो! ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने लगता है। ये जो नाना प्रकार के रूपों वाला जो ये ब्रह्माण्ड है, मेरे पुत्रों! ये जो लोक-लोकान्तरों का जो मण्डल है यह साक्षात्कार बेटा! दृष्टिपात होने लगता है। क्योंकि ब्रह्मरन्ध्र में एक चक्रिका होती है जब वह मुनिवरो! देखो, प्राण और मन की धुक धुकी से जब उसमें गति होती है तो वह गति मुनिवरो! देखो, लोक-लोकान्तरों से मुनिवरो! देखो, उसमें झरना झरने लगता है और वह मुनिवरो! देखो, लोक-लोकान्तरों से हमारा मिलान करा देती है। बेटा! मैं योग के क्षेत्र में नहीं जाना चाहता हूँ बड़ा गम्भीर विषय है, इसके ऊपर बेटा! जब पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान होते थे तो कई समय हो जाते थे, महा हो जाते थे चिन्तन करते-करते। बेटा! आज का विचार मैं गम्भीरता में देना नहीं चाहता हूँ विचार केवल ये कि वह ब्रह्मणा देखो, इंगला, पिंगला और सुषुम्णा नाड़ियों का वर्णन है जहाँ त्रिवेणी का स्थान है। बेटा! घ्राण चक्र और हृदय, कण्ठ चक्र और मुनिवरो! नाभि केन्द्र ब्रह्मरन्ध्र आसुतम् मुनिवरो! देखो, वह अपने में वह अवृत्तियों में रत्त होने लगता है जैसे बेटा! मूलाधार में भी प्राणो की धुक धुकी से संस्कार जागरूक हो जाते हैं। तो आओ,

बेटा! मैं इन प्राणों के सम्बन्ध में या चक्रों के सम्बन्ध में तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ। केवल विचार-विनिमय केवल ये क्या जो ये सप्त होता है सातों के द्वारा हमें याग करना चाहिए। मेरे प्यारे! यह याग कहलाता है यह आध्यात्मिक याग है जहाँ वह अपना सातों जहाँ देखो, घ्राण का साकल्य सुगन्ध है और मुनिवरो! देखो, नेत्रों का साकल्य रूप है और श्रोत्रों का साकल्य शब्द है इन सबका एक साकल्य बना करके मुनिवरो! देखो, जब वह ब्रह्मरन्ध्र में अपने हुत करता है, त्रिव्रतों में हुत कर रहा है, त्रिवेणी में हुत कर रहा है और मूलाधार से ले करके प्रत्येक चक्र में बेटा! वह साकल्य प्रदान करता है हुत को प्राप्त होता है। बेटा! वह शारीरिक यज्ञशाला का वर्णन आता रहा है। हमारे ऋषि-मुनियों में एक ही विशेषता रही है क्या आध्यात्मिक मिलान करते हुए भौतिकवाद को आध्यात्मिकवाद में मिलान करते रहे हैं और उसके ऊपर अध्ययन होता रहा है। मेरे पुत्रों! मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेषता नहीं केवल विचार क्या ये अमृताम् भू क्या ये सप्त होताओं के द्वारा यजमान याग करता है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ये कहता है नौ नमम् ब्रव्हे सप्तमम् ब्रव्हे वर्णम् ब्रव्हा कृतम् मानो देखो, इनके द्वारा यजमान को याग करना ही चाहिए।

पञ्च होता

मेरे प्यारे! देखो, पुनः वह कहता है क्या ऋषि कहता है याज्ञवल्क्य क्या पञ्च होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। बेटा! पञ्च होता कौन से? मानो देखो, पञ्च होता हैं सबसे प्रथम मेरे प्यारे! **गुरुत्व, तरलत्व, तेजोमयी और गति, अन्तरिक्ष।** यह मुनिवरो! पञ्च होताओं को जान करके याग करना चाहिए। मेरे प्यारे! सबसे प्रथम गुरुत्व आता है। जिस भी काल में विज्ञानवेत्ता उपस्थित होते हैं, विज्ञान का युग आता है उसी काल में मेरे प्यारे! वह गुरुत्व परमाणु के ऊपर अध्ययन होता रहा है। और मुनिवरो! देखो, जब तरलत्व के

ऊपर उसकी पुठ लगती है और तरलत्व को ले करके तेजोमयी अग्नि का स्वरूप आ जाता है, वायु गति देता है अन्तरिक्ष में वो गतिवान होते हैं। तो मुनिवरो! देखो, विचार आता रहता है कि प्रत्येक आभा में रमण करना चाहिए कि हमारा जीवन, हमारी प्रतिभा स्वरूप में मानव को कैसा बनना चाहिए। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार-विनिमय क्या वेद का ऋषि कहता है क्या **ये जो पञ्च महाभूत हैं इनके द्वारा इनका साकल्य बनाना चाहिए।** बेटा! गुरुत्व को देखो, तरलत्व में और तरलत्व को मुनिवरो! तेजोमयी में इनका तीन प्रकार का साकल्य बना करके मेरे प्यारे! देखो, गतिवान करा करके अन्तरिक्ष में वो गतिवान होता रहता है। जैसे माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु विद्यमान होते हैं तो उस समय बेटा! आत्मा जिसको शिशु कहते हैं वह शरीर में प्रवेश, माता के गर्भाश्य में जब प्रवेश करता है तो मानो देखो, उस समय अमृतम् देखो, यह गुरुत्व, तरलत्व अमृताम् देखो, वह गुरुत्व से स्थूल बनता है, तरलत्व से मानो देखो, तरलत्व और गुरुत्व दोनों ही मिल करके और तेज उसको तेजस्वी बनाता है। मेरे प्यारे! देखो, मैं अपनी माता से जब ये प्रश्न करता हूँ, तो माता इस वाक् को नहीं जानती। परन्तु विचार-विनिमय केवल यह कि शिशु है माता के गर्भ में एक शिशु विद्यमान है, हम जैसे शिशु हैं परन्तु देखो, वहाँ सर्वत्र देवता अपना क्रियाकलाप कर रहे हैं, मेरा प्रभु कितना विज्ञानवेत्ता है। मैं उसके विज्ञान के ऊपर विचार-विनिमय करता हूँ तो माता के गर्भाश्य में चले जाते हैं मेरे प्यारे! वहाँ नस नाड़ियों का जो समूह है और वह जो शिशु रहता है उसका पिण्ड बन जाता है। तो बेटा! देखो, वह जो तरलत्व पदार्थ है उसे जल कहते हैं, आपो कहते हैं वही उसका ओढन बन जाता है, वही बिछौना है और वही उसके पाशे बन करके उसी में वास कर रहा है। वाह रे देव! तू कैसा विज्ञानवेत्ता है। मानो देखो, उसी में गमन करता रहता है और वह मानो देखो, आपो के एक ही पाशे अमृतम् अग्नि उष्ण बनाती

रहती है, चन्द्रमा अमृत देता है, सूर्य प्रकाश देता है। मेरे पुत्रों! यह कैसा अनुपम समूह है–जब विचार आता है कि देव ने कहाँ-कहाँ समन्वय किया है। नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की छाया–माता मानो देखो, आहार, व्यवहारों से आ रही है। मेरे पुत्रों! मस्तिष्क से आ रही है, नस नाड़ियों का समन्वय रहता है। यह पुरातत नाम की नाड़ी है मानो चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी का समन्वय पुरातत नाम की नाड़ी से है और पुरातत नाम की नाड़ी का समन्वय माता की लोरियों से है। माता की लोरियों से जो नाड़ियाँ चलती हैं, कोई मानो देखो, तेजोमयी पञ्चम नाड़ी बन करके बाल्य की नाभि का और माता की नाभि का एक ही समन्वय रहता, है वहीं से अमृत पाता रहता है, वहीं से आपो को प्राप्त करता रहता है। तो मेरे प्यारे! माता के गर्भस्थल में उसका निर्माण होता है। निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है, अन्धकारकूप में निर्माण कर रहा है परन्तु मेरी भोली माता उससे वंचित रहती है निर्माणवेत्ता से। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष विवेचना देना नहीं चाहता हूँ, केवल विचार-विनिमय यह मैं दूरी भी नहीं जाना चाहता। इन विचारों की पुनरुक्ति में नहीं केवल विचार-विनिमय यह उन पञ्चम नाड़ियों, पञ्च होताओं के द्वारा जब यजमान याग करता है तो बेटा! वह योगेश्वर बन जाता है। वह विज्ञानवेत्ता बन जाता है एक-एक अणु और परमाणु का मिलान करने लगता है।

तीन होता

बेटा! गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी तीन प्रकार के परमाणु हैं इन तीन के ऊपर सर्वत्र विज्ञान विद्यमान रहता है। मेरे प्यारे! वायु परमाणुओं को गति देता है, अन्तरिक्ष में गति कर रहे हैं। तो मेरे प्यारे! आज मैं इस सम्बन्ध में विशेषता नहीं केवल विचार-विनिमय यह कि तीन होताओं के द्वारा यजमान याग करता है–रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण। मेरे प्यारे! विष्णु है पालन करने वाला और सतोगुण में

विष्णु जो पालन कर रहा है, रजोगुण में शिव है मानो जो अनुशासन कर रहा है, तमोगुण में बेटा! उत्पत्ति का मूल है। मेरे पुत्रों! देखो, माता में सर्वत्र यह गुण होते हैं। मुनिवरो! देखो, वह पालन भी कर रही है जैसे परमपिता परमात्मा पालना के मूल में विद्यमान है। वह विष्णु कहलाता है, वही अनुशासन की वृत्तियों में रत्त रहने वाला है। वही मेरे प्यारे! देखो, उत्पत्ति के मूल में विद्यमान रहता है। तो मुनिवरो! देखो, एक ही सूत्र के तीन मनके हैं–वही सतोगुण है, वही रजोगुण है और वही तमोगुण कहलाता है। माता की इच्छा प्रगट होती है कि मैं पुत्र यागी बनूँ, पिता की भी इच्छा होती है मैं पितर यागी बनूँ उग्रता को ले करके उग्रता को समर्पित कर दिया जाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह तमोगुण कहलाता है। तमोगुण यदि मूल में रहता है तो वहाँ सतोगुण भी विद्यमान है और रजोगुण भी है। तीनों गुणों का समावेश बन करके मुनिवरो! तमोगुण की उत्पत्ति होती है, तमोगुण की वृत्तियों में जागरूकता आ जाती है। उसी के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो, रजोगुण है जो अनुशासन कहलाता है। मुनिवरो! देखो, उसमें सतोगुण भी विद्यमान है और तमोगुण से तो उसकी रचना हुई है, वह तो उसका मूल उसके गर्भ में चला जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इसमें रत्त रहने वाली जो वृत्तियाँ हैं, तो विचार आता है वही सतोगुण है बेटा! पालना कर रही है, माता पालना कर रही है, जैसे परमपिता परमात्मा पालना कर रहा है–रचयिता है इसी प्रकार माता भी पालना कर रही है। पालन ब्रव्हे कृतम् देवत्वाम् ब्रह्मा वह पालना कर रही है विष्णु बन करके विष्णु कहलाता है। मेरे पुत्रों! जैसे परमपिता परमात्मा विष्णु है वैसे माता भी विष्णु है, माता ही रजोगुण है, क्योंकि वह अनुशासन में लाने वाली है और अनुशासित करती हुई मुनिवरो! सतोगुण में परिवर्तित हो जाती है। तो आओ, मेरे प्यारे! विचार क्या जो योगेश्वर परमपिता परमात्मा को पान करना चाहता है, उसके आङ्गन में जाना चाहता है बेटा! वह रजोगुण, तमोगुण इनके साकल्य

को बना करके अग्नि के मुखारबिन्दु में, ज्ञान रूपी अग्नि में बेटा! इनका स्वाहा कर दिया जाता है और स्वाहा कह करके मुनिवरो! उनको साकल्य बना करके अपने जीवन को इससे उपराम करके बेटा! मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करने लगता है।

विचार आता रहता है, रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण तीनों को त्यागना होता है और त्याग करके क्योंकि **जहाँ संस्कार बनते हैं वहाँ देखो, उस वृत्ति को त्याग देना चाहिए।** रजोगुण में भी संस्कार बनेंगें, और सतोगुण में भी सत् का अभिमान आएगा। मेरे प्यारे! देखो, सत् में अभिमान होता नहीं है परन्तु देखो, यदि क्रियाकलाप के साथ होता है तो कर्त्ता उसे अभिमान होता है। मेरे प्यारे! उसे भी त्यागना होगा उसके पश्चात् निश्वृत्तियों में रत्त रह करके निष्काम कर्म करना है जिससे बेटा! देखो, कोई संस्कार ही नहीं उत्पन्न होगा। संस्कार बनेंगें तो जन्म बनेगा और जन्म बनेगा तो मेरे प्यारे! देखो वह संसार का नाना प्रकार का प्रपञ्च होता है। तो विचार आता रहता है ऋषि-मुनियों ने कहा क्या मौन हो जाओ और चिन्तन करो, तो उस समय परमपिता परमात्मा का महादेव का चिन्तन करते रहो, रजोगुण, तमोगुण सर्वत्रता को तुम्हें त्यागना होगा। तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का ऋषि कहता है अमृताम् ब्रह्मणा वृत्तम् सरचना त्रिवर्धसुतम् मानो देखो, इस रजोगुण, तमोगुण को भी त्यागना है यदि परमपिता परमात्मा को प्राप्त करना है।

दो होता

मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने यह भी कहा कि दो होताओं के द्वारा याग करता है यजमान। दो होता कौन से होते हैं? बेटा! देखो, दो होता अमृतम् परमपिता और प्रकृति दोनों ही होते हैं। मेरे प्यारे! मन और प्राण दोनों का समावेश कर दिया जाए एक कहलाता है तो इसीलिए मन और प्राण के द्वारा ही देखो यजमान याग करता है। प्राण सूत्र से ही मन को देखो वह स्थिर कर देता है और मानो देखो मन

और प्राण का जब दोनों का समावेश होता है तो सर्वत्र ब्रह्माण्ड को अपने गर्भ में धारण कर लेता है। मेरे प्यारे! वह धारयामि बन करके दोनों का एकोकीकरण का नाम मानो दो होताओं का एकोकी रह जाता है, वही परमपिता परमात्मा की प्रतिभा रह जाती है। मेरे प्यारे! विचार आता रहता है मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट नहीं कर रहा हूँ केवल यह विचार तो हमारे आचार्यों ने पूर्व काल में हमें प्रगट कराए हैं वह हमें स्मरण आते रहते हैं। तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरो! देखो, हम अपने में महान् बने और यह शृंखला जो यागों की होती है यह बड़ी विचित्रता से अपने में धारयामि बनी रहती है।

त्रिवर्धा

आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा यह विचार क्या कहता है क्या नौ होता के द्वारा याग करें सप्त होता के द्वारा और मुनिवरो! देखो, यह संसार पञ्चीकरण में विद्यमान है और त्रिवाद मुनिवरो! देखो, तीन मात्राओं से यह जगत घिरा हुआ है। मेरे प्यारे! ओ३म् की तीन मात्रा हैं अ, उ और म–मानो म में प्रकृति है, उ में जीवात्मा है और देखो, ओ में वह ब्रह्म विद्यमान रहता है। मेरे पुत्रों! देखो, त्रिवर्धा कहलाता है, तीनों गुण हैं–रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण, तीन ही मानो देखो, इस ब्रह्माण्ड की धारा हैं। भूः, भुवः, स्वः मेरे प्यारे! देखो, तीन में विद्यमान है–आत्मा, परमात्मा, प्रकृति। मेरे पुत्रों! देखो परमपिता परमात्मा सृष्टि का रचयिता है, आत्मा भोगता है और प्रकृति रची जाती है। ये तीन पदार्थ अनादि कहलाते हैं, ये त्रिवर्धा में जगत कहलाता है।

उग्र क्रिया

मेरे प्यारे! देखो, त्रि वर्णनं ब्रह्मा जब त्रिवर्धा को जान लेता है, एकोकी रूप में रहता है दो प्रकृति और ब्रह्म रह जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, प्रकृति रचती रहती है, उग्र क्रिया को ले करके रचाया जाता है।

जब परमाणुओं में उग्र क्रिया आती है तो बेटा! यह एक-दूसरे में मिलान करते रहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, परमाणु अन्तरिक्ष में जब गमन करता है तो वही परमाणु बेटा! देखो, उससे अग्नि के स्वरूप और अग्नि के वायु देखो, देता है, वह उग्र क्रिया है। उग्र क्रिया उग्र क्रिया को भी समर्पित कर देती है। वही उग्र क्रिया से बेटा! परमाणु एक-दूसरे से मिलान करना प्रारम्भ करते हैं। मेरे प्यारे! देखो, वह परमाणु मिलान करते-करते वह ब्रह्माण्ड के रूप में रचित हो जाते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, यह परमात्मा और प्रकृति की उग्र क्रिया है। यह उग्र क्रिया से जितना रचयिता जितना रचनाकार है, जो भी रचना हो रही है उसका नाम ही उग्र क्रिया है। चाहे वह माता पिता के रूप में हो, चाहे वह मुनिवरो! वह वैज्ञानिक और प्रकृति के मध्य में हो, चाहे परमात्मा और प्रकृति के मध्य में हो, चाहे प्राणायाम साधना करने वाला प्राण और मन के स्वरूप में सब उग्र क्रिया कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो, यही रचना का एक मूल बन जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं जा रहा हूँ केवल विचार कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए और परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहते हुए एक-दूसरे को जान करके हम सागर से पार हो सकते हैं। यह बेटा! यह जो ज्ञान है यह अनन्तमयी है इसकी कोई सीमा नहीं है। एक-एक परमाणु को जानो दूसरा परमाणु निहित रहता है, द्वितीय को जानो तीसरा निहित रहता है यह अनन्तमयी ब्रह्माण्ड निर्णय-निर्णय करता-करता वह बेटा! अन्त में वह मौन हो जाता है। अन्त में सान्त्वना को प्राप्त हो जाता है क्योंकि अवर्चनीय जो विषय है वह मानव का, इन्द्रियों का विषय न रह करके अपने में मौन हो जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार क्या हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए और उसकी महिमा में रत्त रहते

हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ और वह यजमान अपने में धन्यभाग, अपने में सौभाग्यशाली बन जाता है। क्योंकि यजमान तो प्रत्येक मानव को बनना ही चाहिए, यज्ञ का स्वामी बनना चाहिए। अपने में याग क्रियाओं में बेटा! अपने में गृहपत्य नाम की अग्नि के द्वारा और वैश्वानर नाम की अग्नि के द्वारा गार्हपत्य नाम की अग्नि के द्वारा—गार्हपत्य में ब्रह्मचारी ऊँचा बनता है और गृहपत्य में गृहस्वामी ऊँचा बनता है। वैश्वानर नाम की देखो, उसके विद्यालय में विद्या ऊँची बनती है और मुनिवरो! देखो, उसी सन्यस्तव को प्राप्त हो जाता है। तो बेटा! यह तो अनुपम विषय है इनमें विशेषता में जाना नहीं चाहता हूँ। विचार-विनिमय ये बेटा! केवल तुम्हें शब्द रूप में वर्णन कर रहा हूँ जब इसकी विवेचना आती रहेगी तो मैं वर्णन करता रहूँगा। पुत्रों! वेद के मन्त्रों में इस प्रकार का ज्ञान और विज्ञान है क्या मानव आश्चर्य में चकित हो जाता है।

आओ बेटा! आज का विचार-विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए बेटा! क्या मेरे पुत्रों! देखो, एकोकी, दो और तीन के द्वारा, पञ्चम द्वारा, सप्तम् द्वारा और नवम् द्वारा मुनिवरो! देखो, ग्यारह और सत्रह, चौबीस इसमें होता धीरे-धीरे, शनैः-शनैः उसमें बेटा! अपनी प्रतिभा अपने में लानी प्रारम्भ कर देता है वह स्नेह रूप में रमण करने वाला परमपिता परमात्मा से स्नेह रहता है। बेटा! चौबीस होताओं के द्वारा यजमान याग करे, सत्रह होताओं के द्वारा याग करे, ग्यारह के द्वारा याग करे और नौ द्वारों को एकाग्र करके योग साधना करे और मुनिवरो! सप्त होता के द्वारा, पाँच होता के द्वारा, इस संसार को पञ्चीकरण के द्वारा जान करके, रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण त्रिगुणात्मक इससे पार हो करके बेटा! देखो, प्रकृति, ब्रह्म और एक ही ब्रह्म प्रभु की उपासना करे।

यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें

शेष चर्चाएँ कल प्रगट कर सकूँगा। आज का विचार ये क्या हम मानो देखो हम एक-दूसरे में एक-दूसरे में पिरोए हुए धन्यवादम् ब्रव्हे, **एक-दूसरे में एक-दूसरे के आशीष के द्वारा मानो प्रसन्नता से अपने जीवन को व्यतीत करते हुए सागर से पार हो जाएँ।** यह है बेटा! आज का वाक् मुझे समय मिलेगा शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगें। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् मनु रथम् आपाः रेवाः।

ओ३म् श्वञ्जना रथम् आभ्याम् ऋषि वरुणा आप्याम गतौ रेवाः आपा इदम् गृहितत्त्वा यम सर्वा।

ओ३म् देवाः गृहि वरूणा आप्याम् रथाम्।

दिनाँक : 13 जनवरी, 1991
समय :
स्थान : चण्डीगढ़

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क दिनाँक 1 जनवरी 2019 से 1500 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 150 रु. होगा, जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   ए-59, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

।। ओ३म् ।।

यज्ञ तथा वेद की महत्ता

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन–पाठन किया। हमारे यहाँ जो पाठयक्रम है वह परम्परागतों से ही परम पवित्र माना गया है। बेटा! हम परम्पवित्र उसे कहा करते हैं जिसमें इस परमपिता की मनोहर आभायें और ज्ञान और विज्ञान सदैव हमें द ष्टिपात आता रहता है आज यहाँ हम उस यज्ञ स्वरूप की महिमा का गुण गान गाते चले जा रहे थे।

बेटा! यज्ञ स्वरूप कौन है? जब हम यज्ञ स्वरूप की कल्पना करते हैं और हम उसे वैज्ञानिक रूपों से अंकित करने लगते हैं तो वह मेरा प्यारा प्रभु यज्ञ स्वरूप प्रतीत होने लगता है। वह कैसा सुन्दर यज्ञ स्वरूप है? बेटा! जिसकी आभा का प थ्वी मण्डल से ले करके सूर्य मण्डल अथवा चन्द्र मण्डल, गन्धर्व लोक, इन्द्र लोकों तक हमें दर्शन होता है। जब हम उसकी आभाओं का इनमें दीर्घ दर्शन करते हैं तो हम यह कहा करते हैं कि प्रभु कितना महान है। कितना यज्ञ स्वरूप है, उसकी आभा में यह सर्वत्र प्राणी मात्र न त्य कर रहा है।

हास्य···· कैसा प्रिय वह मेरा प्रभु है। जब हम अपने हृदय को स्वच्छ और निर्मल बना लेते हैं तो वह जो मेरा देव है अपने आंगन में प्रायः धारण कर लेता है। मेरे प्यारे प्रभु का जो हृदय है वह इतना विशाल है, इतना नितान्त है कि मानव का हृदय स्वच्छ हो जाता है, समन्वय हो जाता है। वह कितना सुन्दर द श्य होता है जब एक मानव के हृदय का मिलान प्रभु की उस महान चेतना से अथवा उसके हृदय से होता है। जिस प्रकार माता अपने प्यारे पुत्र को जानती है जब वह क्षुधा से पीड़ित होता है और माता अपने हृदय से, अपने कण्ठ में धारण कर लेती है और अपनी लोरियों का पान कराती

है उसकी क्षुधा को शान्त करने के लिए। जो वेद का विचार है, वेद का हम दीर्घ दर्शन करते हैं, वेदों की जब प्रत्येक मन्त्र शब्द की आभाओं पर हम विचार विनियम करते हैं! तो हमें प्रतीत होता है कि वास्तव में वेद है क्या! वेद तो एक प्रकाश है, महानता उसमें ओत–प्रोत है।

मेरे प्यारे ऋषिवर! बहुत पुरातन काल हो गया जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में नाना प्रकार की उस वैदिक विद्या का प्रायः अध्ययन करता रहता था। वह उस समय आज भी ऐसा स्मरण आने लगता है जैसे आज भी मैं उस महान देव पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में ओत–प्रोत हूँ। वह द श्य स्मरण आता है जिसमें म गराज भी उस शिक्षा को पान करते थे। उस काल में मानव का हृदय इतना स्वच्छ हो जाता था। वेद के अनुकूल हृदय उन योगियों का हुआ करता है जो मल विपेक्ष आवरणों से प थक हो जाते हैं। वैदिक प्रकाश से उनका हृदय प्रकाशित रहता है क्योंकि आत्मा तो प्रायः पिपासु रहती है।

आत्मा तो बेटा! म गराजों में भी रहता है। उस महान हृदय स्वच्छ को, ब्रह्म विद्या को, पवित्र विद्या को, पान करने के लिए किसका हृदय नहीं चाहता? मानव का हृदय ही नहीं म गराजों का हृदय भी यह चाहता रहता है।

तो आज बेटा! मैं इन विवेक की चर्चाओं को अधिक प्रकट करने नहीं आया हूँ। केवल वाक्य हमारा उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि यह उस महान यज्ञ स्वरूप का विचार विनिमय करने का प्रयत्न करें।

बेटा! हमारी यज्ञशाला में चार भाग होते हैं एक भाग में ब्रह्मा विराजमान होता है। द्वितीय भाग में यजमान होता है। त तीय भाग में अध्वर्यु होता है और चतुर्थ भाग में उद्गाता होता है। यह यज्ञशाला में चार आसन होते हैं। यह जो चार आसन हैं आज हमें इनको विचारना चाहिए। इनका क्या–क्या कार्य होता है? यज्ञ में जब विधि महान होती है, अन्तःकरणीय होती है और सुद ढ़ होती है तो उस यज्ञ में उसकी आभा सदैव ओत–प्रोत हो जाती है। मेरे प्यारे ऋषिवर! हमारे यहाँ महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने, और भी मुद्गल इत्यादियों ने, शाण्डिल्य जी ने इस यज्ञ के नाना प्रकार के भेदों का वर्णन

किया है। जिस प्रकार का रुद्र यज्ञ होता है इसी प्रकार साधारण यज्ञ होता है। साधारण यज्ञ उसे कहते हैं जब मानव के समीप कोई उद्देश्य नहीं होता और यज्ञ किया जाता है। परन्तु कर्म काण्ड जो होता है वह पवित्र होना चाहिए। कर्मकाण्ड का अभिप्राय यह है कि कर्म उसी को कहते हैं जब यह चारों आसन पवित्र होते हैं यज्ञशाला में। मुनिवरो बेटा! मुझे तो बहुत समय हो गया है यज्ञ की प्रदक्षिणा कराए।

आज मैं उस वाक्य की पुनरुक्ति नहीं करने जाऊँगा। परन्तु वाक्य यह है कि यज्ञ में चार स्थल होते हैं। सबसे प्रथम ब्रह्मा होता है, उसके पश्चात् यज्ञमान होता है, अध्वर्यु और उद्गाता होता है। उद्गाता तो उद्गान गाता है। ब्रह्मा उसका निरीक्षण करता है। अध्वर्यु द्रव्यपति (सामग्री का अधिकारी) होता है और यजमान उसका अधिपति कहलाया गया है। ये चार आसन होते हैं यज्ञशाला में। इसमें विचारना यह है कि यज्ञशाला में यजमान की कितनी कठिन तपस्या होती है।

हमारे ऋषि मुनियों ने कहा है कि यज्ञशाला में इतनी अग्नि प्रदीप्त होनी चाहिए समिधाओं के द्वारा कि जितना शाकल्य हो उसकी ऊर्ध्वगति हो जाए। यज्ञमान का केवल एक कर्त्तव्य होता है आहुति देना और संकल्प ऊँचा बनाना और नेत्रों की द ष्टि किसी ओर आंगन को न जाना। केवल वह जो ऊर्ध्व अग्नि है उसकी ज्योतियों पर द ष्टिपात करना चाहिए। यह यजमान का एक मुख्य कर्त्तव्य होता है। जितने श्रोतागण होते हैं उनका भी ऐसा ही कर्त्तव्य होता है।

इसके पश्चात् जो उद्गाता होता है वह उद्गान गाता है। उसे अपनी रसना और नेत्रों को शब्दों के साथ में सुगठित करना चाहिए, उनके साथ में मन की आभा तो प्रायः होती ही है क्योंकि शब्द का सम्बन्ध मानव की वाणी से होता है, ह्रदय का मिलान प्रायः बेटा! अक्षरों से होता है, उन शब्दों से होता है जो शब्द वाणी उच्चारण करने वाली है।

इसके पश्चात् अध्वर्यु होता है। यज्ञ में जो द्रव्य होता है वह उसका अधिपति होता है, स्वामी होता है। उसे अध्वर्यु कहते हैं। कितना शाकल्य चाहिए, किस प्रकार का होता होना चाहिए यह सब उसके आंगन में

विराजमान होता है। इसी प्रकार आज हमें इन वाक्यों को वास्तव में विचार विनिमय कर लेना चाहिए। अध्वर्यु ऊँचा होना चाहिए। उसके द्वारा संकीणता नहीं होनी चाहिए। विशाल हृदय से जब शाकल्य को प्रदान किया जाता है, हवि अग्नि को प्रदान की जाती है, तो उसमें इतनी महानता ओत–प्रोत हो जाती है कि वह अग्नि नेत्रों तक को ज्योति प्रदान करती है।

मेरे प्यारे ऋषिवर! मुझे स्मरण है एक समय महाराजा अश्वपति के यहाँ यज्ञ हुआ। वह व ष्टि यज्ञ था। व ष्टि यज्ञ में जो समिधा प्रदान की जाती तो वह इतनी स्वच्छ होनी चाहिए कि उसमें किसी प्रकार का रुग्ण (दोष) नहीं होना चाहिए क्योंकि समिधा अप्रोत कहलाया गया है। समिधा ही तो बेटा! शाकल्य का बिछोना है। परमाणुवाद का जो आसन है वह समिधा कहलाया गया है। समिधा का अभिप्राय यह है कि प्रत्येक वेदमन्त्र के साथ में स्वाहा के साथ में उसका अग्नि से मिलान होना चाहिए। ऐसा हमारे यहाँ बेटा कर्मकाण्ड की पद्धतियों में आता रहता है। आज मैं इस सम्बन्ध में अधिक चर्चा करने नहीं आया हूँ। हमारा प्रत्येक आसन पवित्र होना चाहिए। आज मैं कोई वाक्य गम्भीर उच्चारण करने नहीं आया हूँ। केवल यह कि यज्ञ को संसार को क्लिष्ट नहीं बनाना चाहिए। नर्क भी नहीं बनाना चाहिए। यज्ञ स्वरूप ही स्वीकार कर लेना चाहिए।

हमारा यह मानव शरीर भी तो एक प्रकार की यज्ञशाला है। इसमें इन्द्रियाँ 'होता' बनी हुई हैं। प्राण और मन उद्गाता और अध्वर्यु के रूप में विराजमान हैं। आत्मा इस शरीर में यजमान के रूप में विराजमान है और परमपिता परमात्मा ब्रह्मा के रूप में कार्य कर रहा है। यह शरीर कितनी सुन्दर यज्ञवेदी है, इन्द्रियाँ! होता, बनी हुई हैं और आहुति दी जा रही है। मुनिवरो! कैसी सुन्दर आहुति है। जैसा विचार होता है, जैसा वातावरण होता है। उसी प्रकार की आहुति लेकर के बेटा परमाणुवाद की हृदयरूपी यज्ञवेदी में परिणत कर दी जाती है वह उसका शाकल्य है। मुनिवरो! यह आज हमें विचारना है कि जिस प्रकार हमारे शरीर में कोई भी होता (इन्द्रियाँ) कोई भी क त्य दूरी चला जाए तो वास्तव में देखो हम उनसे विहीन हो जाते हैं। हमारी परम्पराएं परिचर्चाएं समाप्त हो जाती हैं। आज हमें यज्ञ स्वरूप की महीमा को विचारना चाहिए। यज्ञ एक प्रकार का विज्ञान है। बेटा! जितना

भी विज्ञान है यज्ञ वेदी के आधार पर ही उसका निवास होता है। मुनिवरो! शाकल्य में प्रत्येक पदार्थ होता है सुगन्धि–युक्त, पौष्टिक–युक्त, समिधाएँ, नाना घ त वे सब जब अग्नि में आहुति देते हैं तो इस अग्नि से व ष्टि कराई जाती है। इसी यज्ञ से संसार को विजय किया जाता है। वह विजय किस प्रकार किया जाता है? इसको विचारना है। इसका विचार मैं कल प्रकट कर सकूँगा कि यज्ञ से मानव संसार को किस प्रकार विजय करता है? आज तो केवल हम इतना ही वाक्य प्रकट कर रहे हैं।

बेटा! मुझे महापुरुषों का जीवन स्मरण है। जब भगवान राम वन को चले गए तो भयंकर वनों में सीता, राम और लक्ष्मण तीनों प्राणी समिधा एकत्रित करते थे और नाना प्रकार की सामग्री, औषधियाँ एकत्रित करके उनसे यज्ञ करते थे। एक समय भगवान राम से सीता ने आलस्य में कहा, प्रमाद में आकर के कि प्रभु, आज यज्ञ नहीं कर पाते। उन्होंने कहा, सीते! ये शब्द तुम्हारे मुखारविन्द से आज मुझे शोभा नहीं दे रहे हैं क्योंकि यह तुम्हारा मुख है यह भी तो यज्ञ वेदी ही है। इनसे अशुद्ध वाक्य उच्चारण करना यह भी तो शोभा नहीं देता। हे देवी! आज हमें यज्ञ करना चाहिए क्योंकि मानव का तो एक ही कर्म है 'यज्ञ'। यज्ञ से ही मानव का मन पवित्र होता है। देवी! हम संसार को विजय कर सकते हैं तो केवल इस यज्ञ के द्वारा ही कर सकते हैं। ऐसा भगवान राम ने कहा तो सीता लज्जित हो गईं। लक्ष्मण ने कहा, प्रभु! माता ऐसा शब्द क्यों उच्चारण कर रही हैं, इसका मूल कारण क्या है मैं इसको नहीं जान पाया। क्योंकि माता का तो ऐसा विचार किसी काल में बना ही नहीं है।

उस समय मुनिवरो! उन्होंने विचार किया। महाराज निषाद के राज ग ह में से उनके लिए एक समय कुछ भोजन आया। परन्तु वह जो भोजन था वह उन व्यक्तियों का भोजन था जिनके ग हों में यज्ञ नहीं होता था। तो परिणाम क्या? वे विचार माता सीता के हृदय में समाहित हो गए। उस अन्न का प्रभाव मन पर इतना प्रबल हो गया कि अशुद्ध विचारों का उद्‌गार उत्पन्न हो गया। उस समय बेटा! लक्ष्मण ने कहा तो हमें ऐसा अन्न नहीं ग्रहण करना चाहिए। उस अन्न का निर्णय किया गया। निषाद से कहा कि हे निषाद! तुम्हारे यहाँ यह अन्न कहाँ से आया था? उन्होंने कहा, प्रभु! यह जो अन्न

मेरे यहाँ आया यह स्वर्णकार के ग ह में से आया। उस अन्न से यह मन दूषित हो गया होगा। इसमें मेरा दोष नहीं है। राष्ट्र ग ह में इसी प्रकार का अन्न आया वह अन्न मैंने प्रदान कर दिया है। इस प्रकार का विचार बेटा! सीता के जब मन में आया सीता ने लगभग पाँच दिवस तक अन्न पान नहीं किया केवल जल के आधार पर अपने जीवन को व्यतीत करने के पश्चात् छठे दिवस मन का शोधन हो गया। इस मन को शोधन करने का नाम बेटा! सबसे महान यज्ञ कहलाया गया है।

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मैं अधिक चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ क्योंकि मेरे प्यारे महानन्द जी को भी अपने दो शब्द उच्चारण करने हैं। मैं तो केवल इतना ही वाक्य उच्चारण करने के लिए आया हूँ कि प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या को संसार में यज्ञ करना चाहिए, सुगन्धि करनी चाहिए। दुर्गन्धि ही न करता रहे। क्योंकि नेत्रों के द्वारा दुर्गन्धि आती है। घ्राण के द्वारा और रसना के द्वारा, मुखारविन्द के द्वारा, श्रोत्र के द्वारा, प्रत्येक इन्द्रिय उपस्थ और ग्रीवा के द्वारा इस प्रक तिवाद को अशुद्ध ही करता रहता है। अरे यदि यज्ञ और सुगन्धि नहीं करोगे तो यह जो वायुमण्डल है, वातावरण है, यह अशुद्धियों से ओत–प्रोत हो करके मानव समाज पतित हो जाता है। इसलिए बेटा! यज्ञ का ऋषियों ने बड़ा महत्व माना है। आज हमें उस महत्व को विचार विनिय कर लेना चाहिए। ऋषियों ने इसका महत्व क्यों माना है? वेद ने क्यों ऐसा कहा है कि यज्ञ करना चाहिए। वेद इसलिए कहता है क्योंकि वेद स्वयं यज्ञ स्वरूप माना गया है, क्योंकि वेद में ज्ञान और विवेक है, विचार है। उन विचारों से ग ह पवित्र होते हैं, राष्ट्र पवित्र होते हैं, वायु मण्डल पवित्र होते हैं। इसलिए बेटा! वेद का नाम भी यज्ञ स्वरूप को ही कहा गया है।

मानव को अपनी वाणी से भी सुगन्धि करनी चाहिए। वाणी किसकी सुगन्धि–युक्त होती है? जिसमें बेटा! मधुरत्व होता है, यथार्थ होता है, ज्ञान से सजातीय जो वाणी होती है वह वातावरण को पवित्र बना देती है, हृदय को उद्‌गम बना देती है। वाणी मधु भी हो और वह वेद से सजी हुई भी हो परन्तु मानव का यदि हृदय पवित्र नहीं है तो उस वाणी का कुछ नहीं बन पाता। इसीलिए बेटा! उसके साथ में हृदय होना चाहिए क्योंकि यदि वाणी वेद के शब्दों से सजी हुई होगी और हृदय से सजी हुई नहीं होगी तो उस

वाणी का प्रभाव, उस वाणी का अस्तित्व हमारे ऋषि मुनियों ने न होने के तुल्य माना है। आज हम अपने प्यारे प्रभु का गुण–गान गाते हुए इस संसार में इस यज्ञ वेदी पर द ष्टिपात करें क्योंकि यह संसार ही यज्ञ वेदी है। मैंने कई काल में इसकी मीमांसा की है। विचार यह कि आज हम यज्ञ कर्म करने वाले बनें।

भगवान क ष्ण प्रातः सांयकाल यज्ञ करते थे। इतना सुन्दर यज्ञ होता था कि जब प्रातः और सायंकाल अपनी वचनावली अम त का पान करते थे तो पक्षीगण भी मौन हो जाते थे। मुझे स्मरण है बेटा! एक समय वह यज्ञ कर रहे थे। यज्ञ के पश्चात् उन परमाणुवाद पर विचार विनिमय करना प्रारम्भ कर दिया जो यज्ञ में से परमाणु उत्पन्न हुआ। नाना प्रकार के यन्त्र, नाना प्रकार की वैज्ञानिक सामग्री भी उनके द्वारा रहती थी। उसी से वह उसका अध्ययन करने लगे। मुनिवरो! देखो, वह **''यज्ञम् ब्रह्म व्यापः''** क्योंकि यज्ञ जो इसमें संसार का शाकल्य जब ओत–प्रोत किया जाता है, तो वही शाकल्य यज्ञ वेदी को सुन्दर बना देता है। भगवान क ष्ण एक समय यज्ञ पर अध्ययन कर रहे थे उनकी धर्म देवी रुक्मणी जी आ गईं। उन्होंने कहा, प्रभु! आप यह क्या कर रहे हैं? उन्होंने कहा, देवी! मैं इस यज्ञ पर विचार विनिमय कर रहा हूँ। जो मैंने प्रातः सुगन्धित की है उस सुगन्धित में कितनी तरंगे हैं और उनकी कितनी गति, इसका मैं अध्ययन कर रहा हूँ। उन्होंने कहा, प्रभु! यह भी कोई विचार है? उनका अध्ययन करने से आपका क्या बनेगा? मैं यह जानना चाहती हूँ कि मेरे इन हृदयों में, मेरे इन विचारों में कितनी तरंगें होती होंगी? उन्होंने कहा, देवी! तुम्हारे हृदय में यह जो तरंगें हैं, इनका भी निवारण किया जा सकता है। इनकी गणना भी की जा सकती है, यदि तुम्हारे इन वाक्यों में अभिमान नहीं होगा, तुम्हारे इन वाक्यों में जब तक अभिमान है तब तक तुम यज्ञ स्वरूप को जान नहीं पाओगी। तो मेरे प्यारे ऋषिवर! रुक्मणी मौन हो गई, चरणों में ओत–प्रोत होकर के उस समय उसका हृदय इतना परिवर्तन हो गया कि वह स्वयं पति के समीप विराजमान होकर के यज्ञ करती थीं और रात्रि–रात्रि व्यतीत हो जाती थी। यज्ञ के अनुसंधान के विचार विनिमय करने वाला वही तो बेटा! पति–पत्नी का सुन्दर यज्ञ होता है। ग ह को सुन्दर उसी काल में बनाया जाता है जब पति–पत्नी यज्ञ के ऊपर, उसके परमाणुवाद पर, सामग्री शाकल्य पर बेटा! नित्य प्रति विचार

विनियम करते हैं। वह विचार और वह सुगन्धि का जब दोनों का मिलन होता है, दोनों का समन्वय होता है तो बेटा! वह एक महान् यज्ञ होता है, उसकी महानता का वर्णन नहीं किया जाता। हमारे ऋषि–मुनियों ने उसको बहुत ही महत्वपूर्ण माना है। अब मैं बेटा! अपने वाक्यों को समाप्त कर रहा हूँ।

महानन्द जी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा ऋषि मण्डल! मेरे भद्र समाज! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जिस हृदय से हमें यह पवित्र शिक्षा प्रदान कर रहे थे, उसके पश्चात् अपना कोई वाक्य प्रकट करना हमारे लिए शोभनीय नहीं है परन्तु जब इनकी आज्ञा हुई तो हमें भी कुछ सूक्ष्म अपना विचार प्रकट करना है। मैं आज सबसे प्रथम यज्ञों के सम्बन्ध में अपना विचार देना चाहता हूँ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने पुरातन काल के यज्ञों का वर्णन किया, भिन्न–भिन्न यज्ञ होते हैं जैसे 'रुद्र यज्ञ' होता है, 'विष्णु' और 'ब्रह्म यज्ञ' होता है। मैं यज्ञों का वर्णन नहीं कर रहा हूँ परन्तु उन यज्ञों का कर्म–काण्ड भी भिन्न–भिन्न होता है।

आज मैं जब संसार को द ष्टिपात करने लगता हूँ तो इस म त मण्डल में जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक यज्ञ भी द ष्टिपात करता हूँ। यज्ञ आधुनिक काल के कर्मकाण्ड की द ष्टि से तो सजातीय है परन्तु परम्परा का जो कर्मकाण्ड है उसका मैं वर्णन करने नहीं आया हूँ। विचार क्या? वह कर्मकाण्ड, वह विचार बहुत ही ऊँचा है। आज तो मुझे प्रतीत होता है आगे आने वाला जो समय है, जगत है उनमें यज्ञ रुढ़ी बनकर न रह जाए। यज्ञ ही रुढ़ी बनकर रह गया तो यह वेद का ह्रास हो जाएगा, ऐसा न हो जाए। वास्तव में ऐसा सम्भव तो नहीं है क्योंकि समय–समय पर महापुरुषों का आगमन होता रहा है। महापुरुषों के आगमनों से वह रूढ़ी नहीं बनती अथवा रूढ़ी बनने में कोई आश्चर्य भी नहीं क्योंकि समय–समय पर महापुरुषों ने जिस आदेश को, समाज को दिया उस आदेश से समाज दूरी हो गया। जब दूरी हो जाता है तो वह रूढ़ी बन जाता है। इसीलिए जो महापुरुषों ने आदेश दिया है उन आदेशों से दूरी नहीं होना चाहिए। अपने कर्मकाण्ड को निश्चित बना देना चाहिए। मैं भविष्य का विचार प्रकट नहीं करना चाहता हूँ परन्तु रूढ़ी न बन जाये। रूढ़ी को नष्ट करने के लिए मानव का एक समाज होना चाहिए और वह यज्ञों के ऊपर अनुसंधान करने वाला हो। जिससे हम संसार को यह संदेश दे सकें कि उस वेदी के नीचे आ करके

तुम ने जो नाना प्रकार के दूषित अणु एकत्रित कर लिए हैं उन अणुओं का यहाँ विनाश हो सकता है तो यह यज्ञ की सुगन्धि से ही हो सकता है।

यहाँ संसार में विज्ञान समय–समय पर आता रहा है। समय–समय पर उस विज्ञान ने प्रगति की है। आज का संसार प्रगति कर रहा है, कोई वैज्ञानिक चन्द्रमा पर शयन करने जा रहा है, कोई करने के लिए तत्पर हो रहा है। कोई शुक्र की कल्पना कर रहा है, कोई प थ्वी और चन्द्रमा के मध्य में कोई स्थान बनाने का विचार कर रहा है। ऐसे विचार वैज्ञानिकों के मस्तिष्कों में नवीन नहीं हैं क्योंकि यह परम्परा से मानव के मस्तिष्कों में, महापुरुषों के मस्तिष्कों में, राष्ट्र के मस्तिष्कों में यह प्रायः विचार आता रहा है।

देखो, रहा यह वाक्य कि जो मानव धर्म है उसका ह्रास हो रहा है। परन्तु यह धर्म का हास नहीं है क्योंकि धर्म किसे कहते हैं। आज कोई वैज्ञानिक यह नहीं कह रहा है कि मानव को चरित्रहीन हो जाना चाहिए, कोई वैज्ञानिक यह नहीं कह रहा है कि कर्म नहीं करना चाहिए, कोई वैज्ञानिक यह नहीं कह रहा है कि आज तुम प्रभु को स्वीकार न करो। परन्तु आज का वैज्ञानिक इस वाक्य को उच्चारण कर रहा है कि आज हम इस प्रक ति के गर्भ से संसार में सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं। इसी प्रकार आज मानव इस प्रकार के विचार में आ गया है कि आज हम जो विचार दे रहे हैं, वैज्ञानिक विचार है। यही सर्वोपरि विचार है।

हमारे ऋषि–मुनियों ने कहा कि यह जो विज्ञान है, परमाणुवाद है, चन्द्रयान है, नाना प्रकार के यान है, यह परमाणुवाद जहाँ समाप्त होता है वहाँ आध्यात्मिकवाद का, धर्म का प्रारम्भ हो जाता है। जब आध्यात्मिक युग में जाने का मानव प्रयास करता है। उस समय यह द ष्टिपात आने लगता है। जब हम उस युग में चले जाते हैं जिस युग में आत्मा को उन्नत बनाया जाता है जिसमें यौगिक अपनी प्रतिक्रियाओं को जानने लगता है जिस काल में यज्ञ की सुगन्धि ही सुगन्धि समाज में ओत–प्रोत हो जाती है, परमाणुवाद को यज्ञ की सुगन्धि निगल जाती है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई समय वर्णन कराया, आज मैं भी उन वाक्यों को वर्णन कराने आ गया हूँ कि आज का जो मार्ग है वह मार्ग क्या है? वेद का जो मार्ग है उसको प्रत्येक मानव को अपनाना है। वह समय निकट आ

रहा है जब इस महान यज्ञ की वेदी के नीचे यह सर्वत्र विज्ञान आने वाला है। आज जब हम इस राष्ट्र का भ्रमण करते हैं इस सूक्ष्म शरीर के द्वारा, तो हमें ऐसा प्रतीत होता है कि यह जो परमाणुवाद आज हमने निश्चय किया है, एकत्रित किया है, इसका अन्त परिणाम क्या होगा? तो उस समय यह विचारते हैं कि इसका परिणाम केवल अग्नि ही होगी। इसका परिणाम और क्या बनेगा, केवल अग्नि के सिवाय। तब वह कहते हैं इस अग्नि को शान्त करने के लिए हमें क्या करना चाहिए, इस अग्नि को निगलने के लिए कौन सा यत्न होना चाहिए जिससे हम स्वयं अपने–अपने जीवन की सुरक्षा कर सकें।

जब यह विचारते हैं तो वह जो गौ–घ त है, उसमें ऐसा कोई तत्व हैं जिसमें इस परमाणुवाद को निगलने की शक्ति है। परन्तु अब तक उसका कर्म–काण्ड नहीं आया। उसका जब कर्म–काण्ड आता है तो इस भारत भूमि में, भारद्वाज वाली भूमि में आकर के उस विद्या को पान करने वाला यह समाज बनेगा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है। मैं आज भविष्य की चर्चा नहीं प्रकट कर रहा हूँ। यह वाक्य इसलिए उच्चारण कर रहा हूँ क्योंकि यज्ञ एक ऐसा ही कर्म है जो सुगन्धि देता है। दुर्गन्धि नहीं देता। केवल सुगन्धि–ही–सुगन्धि देता है। समाज के लिए जहाँ यह होने वाला है वहाँ ऐसा भी किसी काल में प्रतीत होता है कि कुछ ही समय रह रहा है जब यह समाज, यह जो जगत अपने कर्मों की अग्नि मे भस्म होने वाला है। ऐसा भी प्रतीत होता है क्योंकि यह जो नाना प्रकार का मानव के प्रति घ णा का एक वातावरण अपने ह्रदय में ओत–प्रोत कर लिया है, इस घ णा का परिणाम भी अग्नि ही होता है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को नष्ट करना चाहता है, एक मानव दूसरे मानव को निगलना चाहता है यह क्या है? स्वार्थ की अग्नि प्रत्येक मानव के ह्रदय में ओत–प्रोत हो गई है। वह जो स्वार्थ रूपी अग्नि है वह किसी अन्य मानव को नष्ट नहीं करती उसी मानव को नष्ट कर देती है जिस मानव के ह्रदय में वह अग्नि बलवती हो गई है।

दिनाँक : 16 अक्तूबर, 1971
समय : रात्रि 8:30
स्थान : अथर्वेद पारायण महायज्ञ,
कृष्णा नगर, दिल्ली-51

क्रमशः .....

।। ओ३म् ।।

मानव उत्थान की प्रेरणा

स्वर्ण का जीवन

मुनिवरो! और भी नाना प्रकार के पक्षीगण, जो मानव को अनेक प्रकार का लाभ देते हैं। बेटा! कृषि करने वाला कृषक, पृथ्वी के गर्भ में बीज की स्थापना कर देता है, परन्तु उसमें बहुत से प्राणी इस प्रकार के होते हैं जो पृथ्वी के विष को पान करते रहते हैं और कृषि करने वाला वैश्य मानो उसकी कृषि को ललाहित कर देते हैं। वह ललाहित होती रहती है। और विष, पृथ्वी जो पान करती है उसको पान करते हैं। एक मुनिवरो! इस प्रकार का जो और भी ऊपर को और भी वनस्पतियाँ देखो, अन्न इत्यादि आता है, उसमें इस प्रकार के परमाणु आ जाते हैं, जिसको वह पक्षीगण और जो बहुत सी योनियाँ है उनको पान करके देखो, उनको योग्य बना दिया करते हैं। किसी प्रकार का विनाश नहीं होता उनमें, बेटा! वह कृषक के गृह में आ जाती हैं, कृषक भी अपने आनन्दत्त्व में मग्न हो जाता है। मेरे आदि आचार्यजनों! प्रभु ने एक वस्तु नहीं, बेटा! भिन्न-भिन्न प्रकार की एक दूसरे की सहायक बनाई हैं। ऐसे उसने सुरक्षात्मक के लिए संसार रचा है, बेटा! जब हम इनके आधीन रहते हैं तो सूक्ष्मता है, हम अपने आधीन अपने को इसीलिए स्वीकार नहीं करते क्योंकि हम में वह ज्ञान है, हममें वह ज्ञान सत्ता है। परन्तु यदि हम गम्भीरता से विचार करेंगे, तो हम भी आधीन हैं। मुनिवरो! यदि हम उनके आधीन भी नहीं हैं, यह हमारे आधीन हैं। तो विचार करें, हमारा भी तो कोई न कोई स्वामी होगा, कोई न कोई स्वामी अवश्य होगा। मुनिवरो! अपने पुत्र की स्वामिनी माता होती है, सुन्दर शिक्षा देती है, वह उसकी स्वामिनी होती है, आगे वही पुत्र भी किसी का स्वामी बनता है। परन्तु देखो, वह स्वामी बनता है, तो सेवक भी बनता है, और यह

पक्षीगणों के हम स्वामी हैं, या ये हमारे स्वामी हैं। परन्तु यह हमारे सेवक भी हैं और हम भी किसी के सेवक हैं। जब परमात्मा की लोरियों में से पृथक हुए तो पृथ्वी की गोद में चले गए, पृथ्वी के सेवक बन गए, मुनिवरो! और यह पृथ्वी किसी के आधीन है, ये प्रभु के आधीन है। इसीलिए हम सभी जितने प्राणी, हम सब प्रभु के आधीन हैं, क्योंकि प्रभु ने नियम बनाएँ हैं, प्रभु ने उन योनियों को कर्मों के अनुसार रचा है, और यह योनियाँ रच करके एक दूसरे प्राणी के कितना लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार हमें भी आज लाभदायक बनने के लिए जैसे प्रभु ने प्रत्येक योनि को लाभदायक रचा है। हमें भी संसार में आ करके वह कर्म करना है जिससे प्रत्येक प्राणी के लिए लाभदायक हो सकता है। बेटा! संसार स्वर्ग बन जाता है। आज हम स्वर्ग की कल्पना करते हैं, आज हम भगवान् विष्णु के राष्ट्र की कल्पना करते हैं परन्तु उन कल्पनाओं में वह कल्पनाएँ इसी प्रकार हमारे हृदय में समाहित हो जाती हैं। हम उन्हीं कल्पनाओं को इसी प्रकार से अपने में धारण करते हैं, क्योंकि सतोयुग में प्रत्येक प्राणी अपने-अपने कर्तव्य का पालन करने वाला, दया करने वाला, शुद्धता को परणित करने वाला, वह परमात्मा के आधीन रहने वाली प्रजा, इसीलिए मुनिवरो! देखो, उसको हम सतोयुग कहते हैं। तो संसार में बेटा! एक दूसरे का भय नहीं होता, एक दूसरे के भय का आचार नहीं होता, न पाप होते हैं, जहाँ धर्म होता है, **जहाँ हम परमात्मा से भय, हम परमात्मा से भय को स्वीकार कर लेते हैं, उसी काल में बेटा! हमारा जीवन स्वर्ण का बन जाता है।** हमारा जीवन स्वर्ण का बन जाता है और स्वर्ण का बन करके, बेटा! हमारे जीवन में एक मानवता छा जाती है। अनुपमता छा जाती है। हम किसी प्रकार के पाप कर्म करने के योग्य नहीं रहते, क्योंकि हमारा कोई स्वामी है, वह हमारे साथ है। अब हम पाप भी करें तो कहाँ जा करके करें, किस स्थान में करें, क्योंकि वह हमारे साथ रहने वाला हमारा स्वामी है। मुनिवरो! देखो, इस प्रकार हम अपने स्वामी को स्वीकार कर लेते हैं तो हम नाना प्रकार के पापों से दूरी हो जाते हैं। आज हम बेटा! आज मैं विशेष चर्चा प्रगट

करने नहीं आया, केवल आज के कुछ वेद मन्त्रों का आशय प्रगट करने आया हूँ। शेष चर्चा तो मैं द्वितीय काल में ही प्रगट करूंगा।

प्रभु रचना की अनुपमता

आज तो केवल मैं यह उच्चारण करने चला हूँ, क्या प्रभु ने जो कुछ रचा है वह एक दूसरे का सहायक है, यह मनुष्य ही सहायक नहीं है। बेटा! जितने लोक-लोकान्तर रचे हैं, वह भी एक दूसरे के सहायक हैं, एक दूसरे के आधीन बने हुए हैं, बेटा! चन्द्र मण्डल है, चन्द्र मण्डल में सूर्य का प्रतिबिम्ब आता है चन्द्रमा प्रकाशमान हो जाता है। मङ्गल में सूर्य का प्रतिबिम्ब आता है मङ्गल भी प्रकाशमान हो जाता है। हमारी यह पृथ्वी भी प्रकाशमान सूर्य के आधीन बन करके रहती है। बेटा! एक दूसरे के आधीन बनें, इसी प्रकार सूर्य का भी कोई स्वामी होता है। बेटा! वह बृहस्पति है, बृहस्पति सूर्य को अपने आधीन बना लेता है। जो सूर्य में प्रकाश आता है, सूर्य मण्डल को प्रकाशित करता है वह बृहस्पति है और बृहस्पति एक सूर्य को प्रकाशित नहीं करता। बेटा! जो जिसका प्रकाशक होता है, उसी को सूर्य कहा जाता है। बेटा! सुना!, जो जिसका प्रकाशक होता है, वही उसका सूर्य होता है। हमारा प्रकाशक प्रभु है, तो हमारा वह सूर्य है। हमारे शरीर का प्रकाशक यह सूर्य है, तो यह हमारा सूर्य है। बेटा! सूर्य का भी जो प्रकाशक होता है वह सूर्य के लिए तो वह सूर्य है, तो वह उसका प्रकाशक है। इसी प्रकार अब बृहस्पति के आधीन नाना प्रकार के मण्डल हैं–बेटा! आरुणि हैं, तुरकाल है, और सप्तऋषि हैं, ये सब जैसे सूर्य का प्रकाशक बृहस्पति है, ऐसे ये ही इन लोकों का भी अधिपति बृहस्पति माना जाता है। मुनिवरो! वह उसका प्रकाशक है, एक दूसरे के आधीन बने हुए हैं। मुनिवरो! और बृहस्पति का भी कोई प्रकाशक है, उसे हम ध्रुव कहते हैं। उसे हम ध्रुव कहा करते हैं क्योंकि वह बृहस्पति का प्रकाशक है और बृहस्पति का प्रकाशक होने के नाते हमारे आचार्यों ने उसे सर्वश प्रकाशक कहा है। मुनिवरो! अब एक दूसरे के लोक, एक दूसरे के आधीन बने हुए हैं। सूर्य मण्डल

के आधीन लगभग मुनिवरो! देखो, सहस्त्रों नहीं, तो बेटा! लाखो मण्डल इस सूर्य के आधीन हैं और यहाँ कोई मण्डल मुनिवरो! बृहस्पति के आधीन होंगे, यहाँ कोई मण्डल ध्रुव के आधीन होंगे परन्तु एक दूसरे की आर्कषण शक्ति से संसार स्थिर हो रहा है। कितने लोक हैं प्रभु के सृष्टि में, कितने मण्डल हैं और मुनिवरो! कितने आरुणि इत्यादि लोक कहे जाते हैं एक दूसरे से मिलान नहीं होता, बेटा! एक दूसरे की छाया दूसरी छाया में नहीं प्रकाशित होती। यह कैसी अनुपमता है प्रभु की रचना की। बेटा! सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है। चन्द्रमा अपने प्रकाश को लिए हुए होता है, परन्तु चन्द्रमा की सूर्य की किरणों का मिलान होता है, पूर्णिमा के दिवस। परन्तु यह इतने ऊँचे-ऊँचे लोक एक दूसरे से मिलान यदि कर जाएँ तो बेटा! इनका संघर्ष हो जाएगा। परन्तु वह जो मेरा अनुपम प्रभु है, वह जो संसार का रचयिता अनुपम देव है, उसकी ऐसी महान् विचित्रता है कि एक दूसरे से इनका मिलान नहीं होता। और यदि इनका मिलान हो जाएँ, तो बेटा! प्रलय काल हो जाता है।

प्रलय-काल

जिस काल में मुनिवरो! **प्रलय काल होता है, प्रलय काल में बेटा! सबसे प्रथम ध्रुव में कम्पनता होती है और ध्रुव के आधीन जितने लोक होते है उनमें कम्पनता होती है।** परन्तु कहीं-कहीं हमें ऐसा भी प्राप्त होता है कि सबसे प्रथम कम्पनता सूर्य के आधीन जितने लोक हैं उनमें हुआ करती है। परन्तु ऐसा प्रायः नहीं माना जाता, ऐसा माना जाता है क्या सबसे पूर्व देखो, ध्रुव में कम्पनता हुई, उसके पश्चात् ध्रुव के आधीन लोक हैं उनमें कम्पनता होती है। और उनमें जहाँ कम्पनता हुई उसके पश्चात् जितने आधीन रहने वाले, जहाँ उसमें कम्पनता हुई तो बृहस्पति में कम्पनता प्रारम्भ होने लगती है। बृहस्पति के जितने आधीन हैं उनमें कम्पनता हुई और यह जब कम्पनता बृहस्पति में है, तो सूर्य में भी कम्पनता हुई, जहाँ सूर्य में कम्पनता हुई, तो वहाँ सूर्य के आधीन जितने पृथ्वी आदि मङ्गल लोक है उनमें कम्पनता होने लगती है, और इन

सबमें कम्पनता होती हुई मुनिवरो! देखो, इन्हीं से अब मानव मात्र और जितने शरीरधारी प्राणी हैं वह सब विनाश हो जाते हैं और वह जितने लोक हैं, परन्तु एक दूसरे में मिलान होता हुआ, मुनिवरो! उनके कण-कण हो जाते हैं, इनका एक-एक परमाणु हो जाता है। परमाणु हो करके बेटा! यह जो प्रभु का रचाया हुआ ब्रह्माण्ड है यह समाप्त हो जाता है। समाप्त हो गया, परन्तु उच्चारण करने का अभिप्रायः बेटा! यह देखो, यह हमारा समाप्त भी हो गया, परन्तु एक दूसरे का लोक इतना सहायक है, एक दूसरे की आकर्षण शक्ति से एक दूसरा लोक क्रियात्मक हो रहा है। जो **राहु और केतु दोनों लोक आपस में इनका मिलान, जहाँ इनकी छाया एक गृह में आ जाती है उसी समय बेटा! यह जो सूक्ष्म मण्डल होते हैं, उनमें किसी न किसी प्रकार की आपत्ति आना प्रारम्भ हो जाती है।** उसका कारण यह, क्या पृथ्वी पर जितने वायु, अग्नि इत्यादियों का प्रभाव था, परन्तु उनमें उर्ध्वा गति हो जाती है, या मध्यम गति हो जाती है। मुनिवरो! देखो, उनमें किसी न किसी प्रकार की हानि अवश्य हो जाती है।

मानव कल्याण का मार्ग

बेटा! यह तो आज का हमारा आदेश नहीं है, परन्तु बेटा! यह तो आज वेद का मन्त्र आज्ञा दे रहा है, बेटा! इस वाक् को पूर्व प्रगट करूँगा। आज तो इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है। परन्तु हमारा वाक् यह चल रहा था कि प्रभु ने जो भी कुछ संसार रचाया यह एक दूसरे के आधीन है और यह कितना सुन्दर उस प्रभु की रचना, एक दूसरे की रचना एक दूसरे कि आकर्षण शक्ति से बेटा! लोक-लोकान्तर क्रियाशील हो रहे हैं, प्रगतिशील हैं। परन्तु इन सबका अधिपति कौन है? जो इनको नियन्त्रण में चला रहा है वह कोई सत्ता है, जिसको हम परमपिता परमात्मा कहते हैं। ओह! वह मेरा प्रभु कितना अनुपम है जो इस ब्रह्माण्ड का स्वामी है। परन्तु वाक् यह चल रहा था कि जब मानव एक दूसरे के आधीन, एक दूसरे का स्नेह, कितना घनिष्ठ है प्रभु की रचना में

और जो हम एक प्राणी है, मानव है, यह अपने नियम बनाता है, परन्तु उन्हीं नियमों को बना करके उन्हें नष्ट करके अपने को उन्नतिशील बनाता है। मुनिवरो! देखो, उनमें स्नेह, जब यह ज्ञान हो जाता है कि जब प्रभु ने एक दूसरे के आधीन लोक-लोकान्तर प्रभु ने रचे हैं हमें भी इसी प्रकार प्रभु के आधीन बन करके चलना है। हमें नम्रता के क्षेत्र में जाना है, हमें उच्चता के क्षेत्र में जाना है तो मेरे आदि आचार्यजनों! मेरे पूज्यपाद ऋषि मुनियों! उसी समय मानव मात्र का कल्याण हो जाता है, और मानव मात्र वह सतोयुग की वेदी पर विराजमान होने वाला कहा जाता है। परन्तु यहाँ जब यह मानव मानव को भक्षण करने के लिए, प्राणी प्राणी को भक्षण करने के लिए उद्यत हो जाता है तो वहाँ न तो आत्मिक शान्ति ही प्राप्त होती है, न मानवता रहती है, वह भी अङ्ग-भङ्ग हो जाती है। उसके जीवन की व्यवस्था सब नष्ट हो जाती है।

आज का यह हमारा आदेश यह क्या कह रहा था। आज बेटा! मैं संक्षिप्त वाक् प्रगट करने आया हूँ, और संक्षिप्त वाक् यह था कि हम एक दूसरे के आधीन बने हुए हैं। यदि सूर्य हमें प्रकाश न दे, तो हमारा जीवन नष्ट हो जाएगा। यह विचारो, यदि हम किसी को अपने हृदय में किसी को स्नेह नहीं देते हैं, प्रदान नहीं कर सकते तो हमारा जीवन भी इसी प्रकार–हम भी तो किसी के सूर्य हैं। यदि मेरी पवित्र माता अपने गर्भ से योग्य बालक को उत्पन्न नहीं कर सकती तो मानो देखो वह भी तो अन्धकार में ही विराजमान है। पिता यदि अपने गृह में स्नेह, आनन्द से, प्रीति से न रहेगा तो यह भी उसका, पिता का एक अन्धकार है। परन्तु देखो, एक दूसरे का भार एक दूसरे पर है इसीलिए हमें विचारना है। जैसे हमें सूर्य का प्रकाश न मिले तो हमारा जीवन नष्ट हो जाता है। ऐसे यदि हम भी किसी से स्नेह, प्रीति, मानवता, यौगिकता नहीं प्रदान करेंगे, तो हमारा जीवन भी इसी प्रकार नष्ट हो जाएगा।

बेटा! यह आदेश आज का हमारा समाप्त होने जा रहा है। आज के हमारे आदेशों का अभिप्रायः यह क्या प्रभु ने जो कुछ रचा है, यह बड़ा विचित्र है। यहाँ हम नास्तिक नहीं, हम तो बेटा! आस्तिकवादी हैं

और आस्तिकता की चर्चा प्रगट किया करते हैं। आज का यह आदेश अब समाप्त होने जा रहा है, कल समय मिलेगा, तो बेटा! शेष चर्चाएं मैं कल प्रगट करूँगा।

महर्षि महानन्द जी–प्रभु! आदेश तो आपका बहुत ही सुन्दर, परन्तु समय बहुत सूक्ष्म देने लगे।

पूज्यपाद-गुरुदेवः–चलो, बेटा! इससे द्वितीय काल में अधिक दिया जाएगा।

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्!

पूज्यपाद-गुरुदेव–तो मुनिवरो! आज का यह आदेश हमारा समाप्त होने जा रहा है। आज के आदेशों का अभिप्रायः ये कि मानव मात्र को अपना विकास करना है, प्रभु की सृष्टि में। पशु नहीं बनना, पक्षी नहीं बनना, मानव बनना है, और मानव बनोंगे जब, जब प्रभु की सर्वत्र सृष्टि का ज्ञान, प्रभु की रचना का ज्ञान, प्रभु के ऊपर हमारी आस्था, श्रद्धा हो जाएगी। हम अपने जीवन में श्रद्धालु बन जाते हैं तो हमारे जीवन का कल्याण हो जाता है। यह है आज के हमारे आदेशों का अभिप्रायः। आज का यह आदेश समाप्त हो गया, कल समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे।

ओ३म् भगा वाचान् वरु प्रजामाम् देवं मानाः।

ओ३म् सर्वाणि गृणा वाचो मना कासु मधिना का रथि वरुणो प्रायणं देवं दधिमा वेतु मयाः।

पूज्य महानन्द जी–अच्छा भगवन्! आज्ञा!

पूज्यपाद गुरुदेव–आनन्द मङ्गलम भवति।

दिनाँक : 30 अक्टूबर, 1965
समय : रात्रि 8 बजे
स्थान : आर्य समाज जङ्गपुरा, नई-दिल्ली

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. योगी बनने के लिए सर्वप्रथम अपने विचारों का यथार्थ बनाना है।
2. योगी बनने के लिए आज हमें ध्यान, धारणा समाधियों में लय होना है।
3. सबसे पूर्व अभिमान को त्यागना है।
4. यौगिक क्रियाओं के लिए हमें सबसे पूर्व प्राणायाम की आवश्यकता है।
5. बिना त्याग व तपस्या के योगी बनना मानव का केवल स्वप्न मात्र है।
6. आज हमें माता गायत्री का आदर करना है। गायत्री के अनेक रूप हैं।
7. हमें ज्ञान और विज्ञान को जानने के लिए यौगिक बनना है।
8. दूसरों की भावनाओं को आदर देना चाहिए।
9. शुद्ध ज्ञान के साथ नम्रता आएगी ज्ञान न होगा तो नम्रता कभी न आ सकेगी।
10. धर्म में आस्था न होने पर मानव कभी भी मानवता पर नहीं पहुँच सकता।
11. हमारे हृदय में आस्था हो, अन्तःकरण और वाणी में नम्रता हो, यही धर्म का सबसे बड़ा लक्षण माना गया है।
12. मानव नम्रतापूर्वक धर्म के प्रति ऊँची आस्था रखकर धर्म के लिए कर्तव्य पालन में दृढ़ हो जाए।
13. सत्य को स्वीकार करना चाहिए।
14. वेद का मत है कि तमोगुणी व्यक्ति का भी आदर करो।
15. तमोगुणी से सतोगुणी बनाने के लिए उसका आदर करना चाहिए।
16. आत्मा के सहयोग तक ही हमारे प्राण और चक्षु कार्य कर रहे हैं।
17. इस सुन्दर संसार में धर्म की तथा राजनीति की मर्यादा बाँध करके परलोक सिधारें।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

मास्टर आदित्य

श्रीमति विनेश त्यागी धर्मपत्नी श्री श्रीपाल त्यागी जी निवासी संजयनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश ने चिरन्जीव सुपौत्र प्रिय आदित्य त्यागी सुपुत्र श्रीमति ज्योति त्यागी व मनीष त्यागी के छठवें जन्मदिवस के शुभ अवसर पर 1101 रु. का सात्त्विक सहयोग प्रकाशन कार्य के लिए बड़ी उदारता व नम्र भाव से पूज्यपाद-गुरुदेव के चरण कमलों में अर्पित किया है। जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रगट करती है।

श्री त्यागी जी के पिताजी भी पूज्यपाद-गुरुदेव जी के अनन्य भक्त थे और उन्हीं की शिक्षा को अपने जीवन में अपनाते हुए श्री त्यागी जी प्रकाशन के कार्य के लिए समय-समय पर अनुदान प्रदान करते रहते हैं और गाँधीधाम समिति लाक्षागृह, बरनावा में भी निरन्तर यागों के शुभ अवसर पर अपनी आहुति देने में अग्रगणीय रहते हैं। अपने परिवार में भी प्रति वर्ष यज्ञ कराते हुए अपने परिवार के जीवन को वैदिक परम्परा से सम्पन्न बनाते हुए अपने सम्बन्धी मित्रों को भी निरन्तर प्रेरित करते रहते हैं। याग की ज्योति को प्रज्ज्वलित रखने में गाजियाबाद नगर में भी सामूहिक यज्ञ का आयोजन अपने मित्रों एवम् सम्बन्धियों के सहयोग से प्रति वर्ष कराने में अग्रगणीय रहते हैं।

ऐसे वैदिक परम्परा से सम्पन्न परिवार को धन्यवाद प्रगट करते हुए समिति उनके सुपौत्र के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर बारम्बार शुभकामनाएँ प्रगट करती है। और परमपिता परमात्मा से समस्त परिवार की सुख शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी उन्नति की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती हैं।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

राष्ट्र कल्याणार्थ पञ्चम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवम् योग साधना शिविर

दिनांक 23 दिसम्बर 2018 रविवार से 30 दिसम्बर 2018 रविवार तक

ग्राम खरखौदा यज्ञस्थली मौहल्ला तिहाई (मुण्डा महादेव मन्दिर के पास)

—: निमन्त्रण पत्र :—

प्रिय आत्मीय स्वजनों,

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् ब्रह्मलीन पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व जन्म के शृङ्गी ऋषि जी) की पावमानी प्रेरणा से प्राणी मात्र के जीवन की जीवन सत्ता को सम्पन्न बनाने के लिए **''पञ्चम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ''** का आयोजन **''याग प्रचार समिति''** ग्राम खरखौदा द्वारा आप सबके सहयोग से अत्यन्त श्रद्धा व हर्षोल्लास से पाँच यज्ञवेदियों पर वैदिक परम्परा आदि ऋषियों द्वारा निर्धारित कर्मकाण्ड पद्धति अनुसार सम्पन्न होगा। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि इस महायज्ञ में प्रातः व सायँ समयानुसार अपने परिवार, सम्बन्धी व ईष्ट मित्रों सहित उपस्थित होकर तन, मन, धन से आहुति प्रदान करके अपने जीवन कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करते हुए, जीवन में आने वाले उद्देश्य की ओर अग्रसित होते हुए ऊर्ध्वागति में संलग्न रहें।

यज्ञ के ब्रह्मा : आचार्य श्री गुरुवचन शास्त्री जी, लाक्षागृह बरनावा जिला बागपत (उ.प्र.)

आचार्य एवम् वेदपाठी : श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, बरनावा एवम् अन्य प्रतिष्ठित गुरुकुल के ब्रह्मचारीगण व ब्रह्मचारिणी।

आमन्त्रित पूज्यनीय सन्यासीगण : स्वामी चितेश्वरानन्द जी महाराज, देहरादून, स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली, स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली व वर्ल्ड काउन्सिल ऑफ आर्य समाज एवम् स्वामी कर्मवीर जी महाराज, उत्तराखण्ड।

आमंत्रित विद्वतगण : श्री माया प्रकाश जी, कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली व वर्ल्ड काउन्सिल ऑफ आर्य समाज, श्री विनोद कुमार शास्त्री प्रधानाचार्य महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, बरनावा, आचार्य कर्मवीर जी, नोएडा।

—: कार्यक्रम :—

दिनांक 23 दिसम्बर 2018 से 29 दिसम्बर 2018 तक

प्रातः 7:15 बजे ओ३म् ध्वजारोहण (प्रथम दिवस) एवम् ब्रह्मयज्ञ (संध्या)

प्रातः 8:00 बजे से **11:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

सायंः 2:15 बजे से **5:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

दिनांक 30 दिसम्बर 2018 प्रातः

प्रातः 8:00 बजे से **11:00 बजे** तक यज्ञ और महायज्ञ की पूर्णाहुति तत्पश्चात् प्रवचन एवं आशीर्वाद शान्ति पाठ व ब्रह्मभोज।

निवेदक समस्त खरखौदा निवासी

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	110.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	110.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	110.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	30.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की व वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मात-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	120.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	45.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू सुपुत्र श्री सोमदत्त त्यागी, तलहटा	100 रुपये

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) **PAN No. – AAAAV7866J**
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900
website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

वसुन्धरा के नाना पर्यायवाची हैं, जैसे वसुन्धरा पृथ्वी को कहते हैं जो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों को प्रदान करने वाली है, वह वसुन्धरा, जिसके गर्भ में हम नाना प्रकार की वनस्पतियों के द्वारा पनपते रहते हैं। तो इसीलिए हम उस माता को वसुन्धरा कहा करते हैं। जब हम यह विचारने लगते हैं कि मानव जीवन से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध है जब हम यह विचारने लगते हैं, तो हमारा हृदय विशालता को प्राप्त होने लगता है, जब हम अपने मन में यह अनुभव करते हैं, अपने हृदय में स्वयं यह अनुभव करते हैं कि वह तो वास्तव में महामना है, वह माता महामना है। हमारा कल्याण करने वाली है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 47 : अंक : 555
दिसम्बर 2018

मूल्यः
दस रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-12-2018
Published on 5th day of the same month